नवभारत
(18.09.2014)

रूह कांप जाए, ऐसा उपचार करवा रहे कुपोषितों का?

मासूमों को गर्म सलाखों से दगवाते माँ-बाप

खंडवा, 17 सितम्बर, नससे. क्या कोई अपने मासूमों को गर्म सलाखों से दाग सकता है? वह भी उन मासूमों को, जिनका वजन काफी कम है. कभी भी मौत के मुंह में समा सकते हैं. ये मासूम ज़ीवन जीने को तड़प रहे हैं. लेकिन समाज की विकृत मानसिकता इन्हें सलाखों से दागने में कांपती भी नहीं. लोहे की गर्म सलाखों से दागते वक्त मासूमों की चित्कार किसी जानवर से कम नहीं होती. इसके बावजूद माँ-बाप कड़क जी करके अपने ही बच्चों पर इस तरह के जुल्म खुद ढ़हवाते हैं.

खंडवा जिले के सुदूर आदिवासी गांवों में ऐसा हो रहा है. माँ-बाप अपने मासूमों के दुश्मन नहीं हैं. वे अपने बच्चे की जान लेना नहीं, बचाना चाहते हैं. इसीलिए इस तरह का करतब अशिक्षा के कारण कर रहे हैं. खालवा विकासखंड के गाँवों में अति कम वजन या दूसरे शब्दों में कहें तो, कुपोषित मासूमों को इस तरह दराती के पीछे वाले हिस्से या सलाखों को गर्म करके दागा जा रहा है. इन आदिवासी माँ बाप को (अंध) विश्वास है

(शेष देश-विदेश पृष्ठ पर)

बाल शक्ति केंद्र पहुंचे चाचवा लगे बच्चे

शहर के बाल शक्ति केंद्र में इस समय अति कम वजन वाले 39 बच्चे भर्ती हैं. इस माह में 84 बच्चे कुल आए थे. अगस्त का आंकड़ा देखें तो वह 60 था. बाल शक्ति केंद्र में अति कम वजन वाले बच्चों के स्वास्थ्य में 10 से 15 प्रतिशत रिकवरी होने के बाद अस्पताल यानि बाल शक्ति केंद्र से छुट्टी दे दी जाती है. लगभग दो माह का ट्रीटमेंट होता है. बच्चे की मां को भी भोजन व मजदूरी दी जाती है. फिलहाल जो बच्चे अति कम वजन वाले भर्ती हैं, उनमें अमित, भुवनेश्वरी को चाचवे लगे हुए हैं. उन्हें पेट पर दागा गया है. वे हरसूद के लखनपुर बंदी, गांव के हैं. उनके परिजनों के मुताबिक गांव के ही ओझा से उपचार कराया गया था.

रूह कांप जाए...

कि उनका कुपोषित बच्चा पेट पर दागने से ठीक व स्वस्थ्य हो जाएगा। इस रीत या कथित उपचार को कोरकू भाषा में चाचवा भी कहा जाता है। पहले यह कथित उपचार जानवरों के लिये उपयोग में लाया जाता था। इसे दागना कहा जाता है। लेकिन इस युग में आदिवासी बच्चों को गांव के अनपढ़ ओझा कठोर दिल करके गर्म सलाखों से दाग रहे हैं। वे मासूम जो कमजोरी, कुपोषण व अति कम वजन के होने के कारण प्रतिकार करने के लिये हाथ भी नहीं उठा पाते। उन्हें दागा जा रहा है।

सरकार खालवा विकासखंड में कुपोषण पर शुरू से अब तक एक अरब से ज्यादा खर्च कर चुकी है। इस क्षेत्र में आदिवासी रिज़र्व विधानसभा सीट भी है। पंद्रह सालों से क्षेत्र ने मंत्री भी दिया। फिर भी आज तक चाचवा की प्रथा बंद क्यों नहीं हुई? ऐसे ओझाओं को जड़ मूल से कारोबार बंद क्यों नहीं कर दिया गया?